Help-Kit 1-5

हेनरी

संस्कृत सुरभि

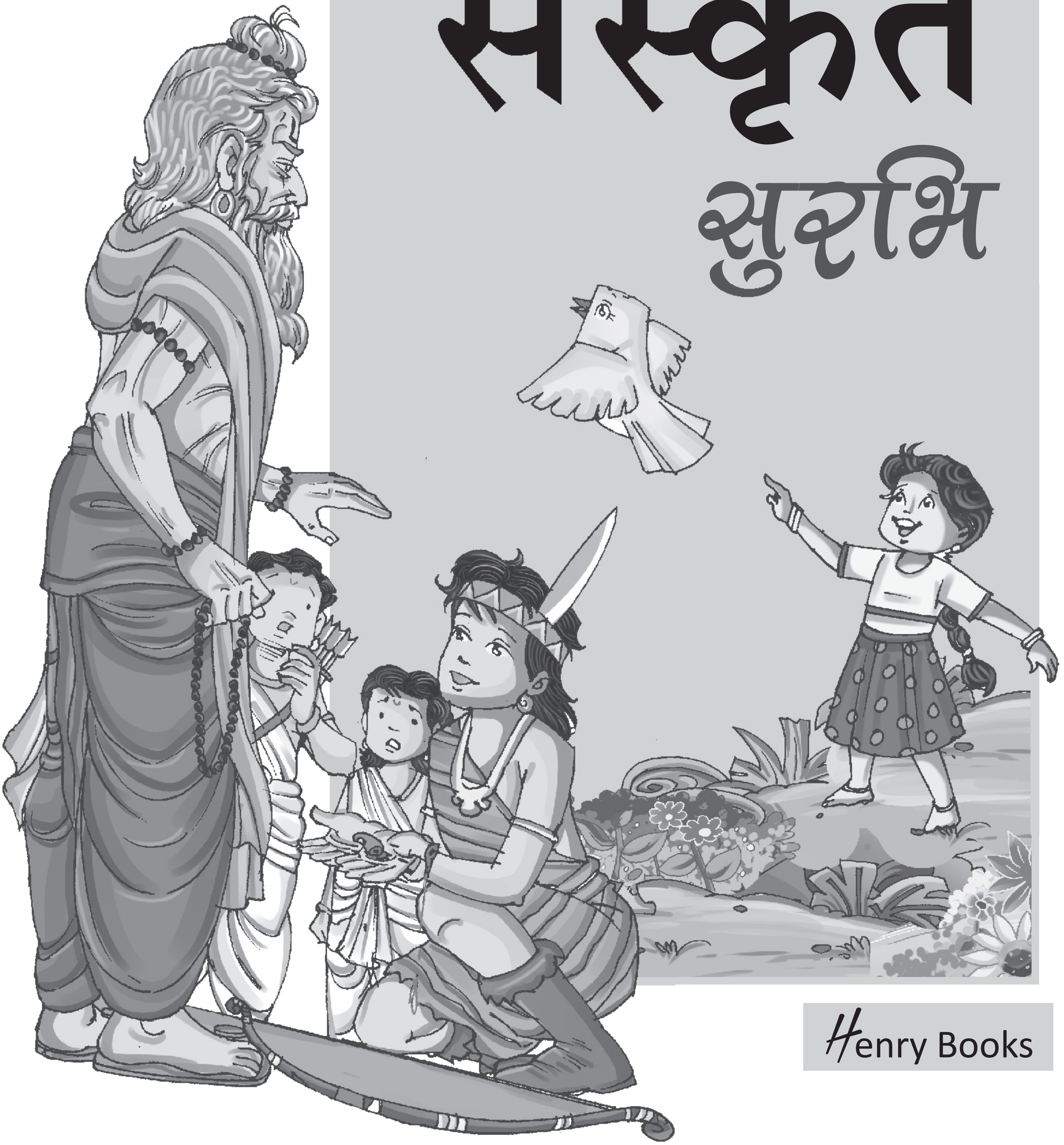

Henry Books

पाठ-1 प्रार्थना

अभ्यासकार्यम्

1. (क) गुरु: साक्षात् परब्रह्म अस्ति।
(ख) गुरु: महेश्वर इव अस्ति।
(ग) विष्णु इव गुरु अस्ति।

2. (क) गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो, (ख) साक्षात्, (ग) तस्मै

3. नम:, महेश्वर:, साक्षात्, गुरु:, परमब्रह्म, तस्मै

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-2 संस्कृतवर्णमाला

अभ्यासकार्यम्

1.

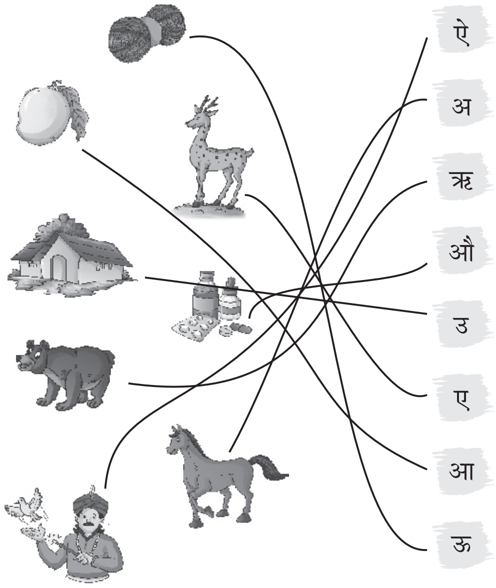

2. अश्व:, ईश:, अंशुमान, ओक:, उटजम्, औषधम्

3. (क) (iv), (ख) (i), (ग) (ii), (घ) (iii)

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

व्यञ्जनानि (व्यंजन)

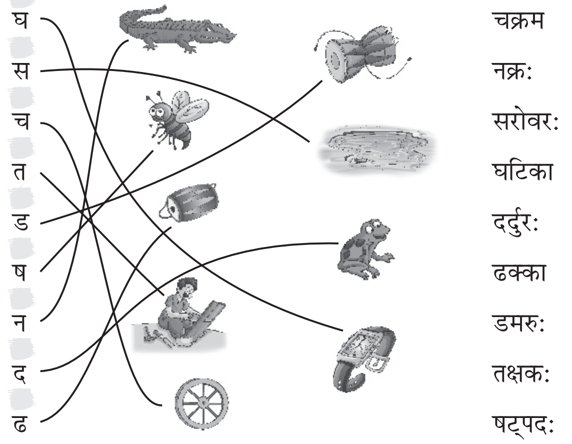

पाठ-3 अमात्रिका: शब्दा:

स्वयं कीजिए।

पाठ-4 मात्राबोध:

स्वयं कीजिए।

पाठ-5 मात्राणां प्रयोग:

अभ्यासकार्यम्

निम्नलिखितेषु शब्देषु प्रयुक्ता: मात्रा: रिक्तस्थानेषु लिखित।

पादप:	प	+	ा	+	द	+	**प:**	
मीन:	म	+	ी	+	न:			
शुक:	श	+	ु	+	क:			
मयूर:	म	+	य	+	ू	+	र:	
ओक:	अ	+	ो	+	क:			
वृक:	व	+	ृ	+	क:			
शैल:	श	+	ै	+	ल:			
अंस:	अ	+	ं	+	स:			
बक:	ब	+	क	+	**:**			

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-6 लिङ्गानुसारं संज्ञाशब्दानां ज्ञानम्

अभ्यासकार्यम्

1. कुर्सी, बैल, तराजू, गेंद, झोंपड़ी, चूहा, मोर, रत्न

2. पुंल्लिङ्गम् – सिंह:, वानर:, शशक:
स्त्रीलिङ्गम् – मक्षिका, तुला:, लूता
नपुंसकलिङ्गम् – कन्दुकम्, वनम्, पर्णम्

3. गज:, मूषक:, वक: अश्व:

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-7 वचनपुरूषाणां ज्ञानम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-8 क्रियाणां प्रयोग:

अभ्यासकार्यम्

1. बहुत-सी चींटियाँ, यह (स्त्री), दौड़ते हैं (दो), मैना, जाती है (स्त्री), तुम दोनों

2. एष: वेदान्त:। इमा: पिपीलिका:। एषा बाला।
अयं: **पठति** । पिपीलिका: **गच्छन्ति**। इयं **धावति**।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-9 गणना

अभ्यासकार्यम्

1. (क) चत्वार: मृगा: धावति।

(ख) अष्ट कन्दुकानि सन्ति?

(ग) द्वे बालिका: पठन्ति।

2. 19, 18, 13, 12, 9, 20

3. सप्तदश, एकादश, पञ्चदश, सप्त, चतुर्दश, अष्ट, षड्, पञ्च

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-10 सम्वाद:

स्वयं कीजिए।

पाठ-11 अहम्

अभ्यासकार्यम्

1. (क) प्रिया पठनाय विद्यालयं गच्छति।

(ख) प्रिया कुक्कुरात् न बिभेति।

(ग) प्रियायै पठनम्, लेखनम्, क्रीड़नं गायनं च रोचते।

2. (क) प्रिया, (ख) बुभुक्षिताय, (ग) क्रीड़ाक्षेत्रं, (घ) च आपणात् फलानि

3. (क) मैं पढ़ने के लिए जाती हूँ।

(ख) मेरा भाई खेलने के लिए जाता है।

(ग) मैं कुत्ते से नहीं डरती हूँ।

(घ) मैं प्रतिदिन लिखती हूँ।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-12 पक्षिण:

अभ्यासकार्यम्

1. (क) हंस: मानसरोवरे वसति।

(ख) हंसस्य वर्ण: धवल:।

(ग) शुकस्यं वर्ण: हरित:।

(घ) मयूर: नृत्यति।

(ङ) काक: कर्कशं वदति।

2. (क) सुन्दर:, (ख) कृष्ण:, (ग) जले

3. (क) शुक:, (ख) मयूर:, (ग) बक:, (घ) काक:

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-13 विविधं ज्ञानम्

अभ्यासकार्यम्

1. (क) कमलं सुंदरं भवति।

(ख) धेनू: मधुरं दुग्धं यच्छति।

(ग) रजक: वस्त्राणि प्रक्षालयति।

2. (क) सरोवरे, (ख) तृणं, (ग) माता

3. (क) यह कमल है।

(ख) लोग दूध पीते हैं।

(ग) दूध शरीर को पुष्ट करता है।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

हेनरी संस्कृत सुरभि-2

पाठ-1 वन्दना (प्रार्थना)

अभ्यासकार्यम्

1. (क) अहं पूर्वम् ईश्वरं स्मरामि तदनन्तरं गुरुजनान् नमामि, पुन: समये पठनम्, क्रीडनं कार्याणि च करोमि।

(ख) हे प्रभु! अस्मान् पापात् निवारयतु निर्भयतां च ददातु। वयं तव शरणे आयाम:, अस्मान् रक्षतु।

2. ईश्वरं, नमाम्यहम्, काले, कार्याणि, पठनं, क्रीडनं

3. प् + अ + ठ् + अ + न् + अ + म्   प् + आ + प् + आ + द

द् + ए + व् + ए + श् + अ   न् + अ + म् + आ + म् + इ

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-2 अकारान्त पुंल्लिङ्गशब्दा:

अभ्यासकार्यम्

1. मृग:, बक:, रजक:, मालाकार:, सूर्य:, सिहं:

2. चंद्रमा, शेर, कबूतर, बगुला, किसान, घोड़ा

3. रजक:, कपोत:, अध्यापक:

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-3 अकारान्त स्त्रीलिङ्गशब्दाः

अभ्यासकार्यम्

1. कली, चींटी, लोमड़ी, मकड़ी, बकरी, कोयल

2. शि**क्षिका**, क**लि**का, पि**पीलिका**, **लोम**शा, **मक्षि**का, चटका

3. कोकिला

शाखा

चटका

कलिका

अजा

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-4 अकारान्त नपुंसकलिङ्गशब्दाः

अभ्यासकार्यम्

1. फलम्, चित्रम्, चक्रम्, नेत्रम्

2. फूल, बाग, आँख, रूपया, घर, फल

3. (क) नेत्रं सुंदरम् अस्ति।

(ख) फलं मधुरम् अस्ति।

(ग) आम्रं पक्वम् अस्ति।

(घ) पत्रं हरितम् अस्ति।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-5 कारकम्

अभ्यासकार्यम्

1. (क) मोहन: विद्यालयं गच्छति।

(ख) रमेश: पुस्तकं पठति।

(ग) राम: भोजनं खादति।

(घ) पिताही कयां श्रावयति।

2. (क) iv, (ख) v, (ग) vi, (घ) iii, (ङ) i, (च) ii

3. (क) सम्बन्ध (ख) अधिकरणकारकस्य

(ग) सप्त (घ) करणकारकस्य

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-6 कर्ताकारकम्

अभ्यासकार्यम्

1. (क) बालक: पठति, लिखति ज्ञानं च अर्जयति।

(ख) बालका: व्यायामं मल्लयुद्धं च कुर्वन्ति।

(ग) कृषकौ दृष्टिजलेन क्षेत्रं सिञ्चत:।

2. (क) बालक:, (ख) वानरौ, (ग) अत्र

3. (क) बालकौ किं कुरुत:?

(ख) ते बालका: व्यायामं मल्लयुद्धं च कुर्वन्ति।

(ग) कृषकौ वृष्टिजलेन क्षेत्रं सिञ्चत:।

(घ) अत्र बहव: वानरा: निवसन्ति।

(ङ) वानरौ वृक्षोपरि कूर्दत:।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-7 कर्मकारकम्

अभ्यासकार्यम्

1. (क) बालक: श्रुतलेखं लिखति।

(ख) कृषकौ चित्रं पश्यत:।

(ग) रमेश: पाठं स्मरति।

2. (क) लिखति, (ख) लेखं, (ग) ईश्वरं

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-8 कर्मकारकम्

अभ्यासकार्यम्

1. (क) नद्या जलेन मालाकार: वृक्षान् सिञ्चति।

(ख) सुधा अश्वरथेन तत्र गच्छति।

(ग) राकेश: कर्णाभ्यां बधिर:।

(घ) छात्रा: तत्र कन्दुकेन व्यायामं कुर्वन्ति।

2. (क) अत्र एका शोभना नदी अस्ति।

(ख) रमेश: जनकेनसह नदीं गच्छति।

(ग) तडागस्य तटे सर्वेषां मन: प्रसन्न:भवति।

(घ) मुनेश: तत्र पादाभ्यां गच्छति।

3. (क) यहाँ लड़के लड़कियों के साथ खेलते हैं।

(ख) राकेश: कानों से बहरा है।

(ग) सुधा भी घोड़े वाले रथ से वहाँ जाती है।

(घ) जल से फूल खिलते हैं।

4. (क) बाल: अम्बया सह गच्छति।

(ख) जलेन पुष्पाणि विकसन्ति।

(ग) मालाकार: जलेन वृक्षान् सिञ्चति।

(घ) जना: प्रसन्ना: भवन्ति।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-9 सम्प्रदान कारकम्

अभ्यासकार्यम्

1. (क) बालक: भोजनाय गृहम् आगच्छति।
   (ख) जना: उपयोगिन: वस्तूनि क्रेतुम् इतस्तत: भ्रमन्ति।
   (ग) जना: पर्यटनाय बद्रीनाथं गच्छन्ति।
2. (क) ब्राह्मणाय, (ख) श्वानाय, (ग) बद्रीनाथं
3.

शब्द	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
राम:	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्य:
ब्राह्मण:	ब्राह्मणाय	ब्राह्मणाभ्याम्	ब्राह्मणेभ्य:
दिनेश:	दिनेशाय	दिनेशाभ्याम्	दिनेशेभ्य:

4. (क) नृप: ब्राह्मणाय दानं यच्छति।
   (ख) बालिके पठनाय विद्यालयं गच्छत:।
   (ग) जना: पादाभ्यां महानसं गच्छन्ति।
5. (क) लोग गर्म कुंड में नहाने के लिए जाते हैं।
   (ख) नौकर कुत्ते को भोजन देता है।
   (ग) सभी मनोरंजन के लिए बाजार को जाते हैं।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-10 अपादान कारकम्

अभ्यासकार्यम्

1. (क) हिमालयात् गङ्गा निस्सरति।
   (ख) छात्रा: विद्यालयात् आगच्छन्ति।
   (ग) मम गृहात् समीपे देवालय: अस्ति।
2. (क) गृहात्, (ख) देवालय:, (ग) पुष्पाणि
3. (क) निर्झरात् जलं पतति।
   (ख) वृक्षेभ्य: पुष्पाणि पतन्ति।
   (ग) कृषक: ग्रामात् नगरं गच्छति।
   (घ) गङ्गा हिमालयात् निस्सरति।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-11 सम्बन्ध कारकम्

अभ्यासकार्यम्

1. (क) वर्षाकालस्य उत्सवा: उद्याने भवन्ति।
   (ख) उद्यानस्य वातावरण: अति सुन्दर: अस्ति।
   (ग) इदं मंम मित्रस्य उद्यानम् अस्ति।
2. (क) अवर्णनीया च, (ख) मित्रस्य, (ग) समक्षे वृक्षोपकारं
3. (क) मालाकार: वृक्षान् सिञ्चति।
   (ख) अहं मम मित्राणि च उद्याने सन्ति।
   (ग) उद्यानस्य वातावरण: अति सुन्दर: अस्ति।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-12 अधिकरण कारकम्

अभ्यासकार्यम्

1. (क) आश्रमे मुनय:ईश्वरं भजन्ति।
   (ख) वानप्रस्थिन:आश्रमे निवसन्ति देवार्चनं च कुर्वन्ति।
   (ग) आश्रमे मत्तकोकिल: मधुरं कूजति।
   (घ) शान्ति स्थलम् आश्रमं मन्यन्ते।
2. (क) सुन्दर:, (ख) उटजेषु, (ग) कालं, (घ) आश्रमे
3. (क) आश्रमे अनेकानि उटजानि सन्ति।
   (ख) उटजेषु मुनय: निवसन्ति।
   (ग) तत्र बहव: छात्रा:अपि निवसन्ति।
4. (क) आश्रम में अनेक पशु-पक्षी रहते हैं।
   (ख) आश्रम में मतवाली कोयल मीठी-मीठा कूकती है।
   (ग) संध्या-तर्पण करके यज्ञ करते हैं।
   (घ) आश्रम को शांति-स्थल मानते हैं।
   (ङ) आश्रम में फलों से लदे अनेक वृक्ष हैं।
5.

शब्द	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
नगरम्	नगरे	नगरयो:	नगरेषु
आश्रम:	आश्रमे	आश्रमयो:	आश्रमेषु
जन:	जने	जनयो:	जनेषु

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-13 सम्बोधन कारकम्

अभ्यासकार्यम्

1. (क) मातृपितृ भक्ति: लाभकारी भवन्ति।
   (ख) रमेशस्य गृहे तस्य जन्मोत्सव: अस्ति।

(ग) षड् ऋतवः भवन्ति।

2. (क) प्रसन्नता, प्रसन्नता, (ख) सर्वे छात्राः, (ग) आचार्यवर्यः

3. (क) हे राम! अत्र आगच्छतु।

(ख) हे अध्यापक! अहं पत्रं लिखामि।

(ग) हे बालकौ! युवां किं लिखतः।

(घ) पुष्पेषु भ्रमराः गुञ्जन्ति।

(ङ) सदाचारी सदा सुखी भवति।

4.

छात्राः	विद्यार्थिनः
नवीनानि	नूतनानि
पुष्पाणि	कुसुमानि
पवनः	वायुः
सर्वदा	सदा

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-14 प्रार्थनाकालः

अभ्यासकार्यम्

1. (क) गच्छ, (ख) कुरू, (ग) स्तम्ः, (घ) पठत

2. (क) ✓, (ख) ✓, (ग) ✓, (घ) ✓

3. (क) तुम जल लाओ।

(ख) तुम सब पाठ याद करो।

(ग) तु सब बुद्धिमान हो।

(घ) तुम दोनों शांति चाहो (रखो)।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-15 वार्तालापः

अभ्यासकार्यम्

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. विद्यार्थी स्वयं करें।

3. (क) अहं छात्रावासे वसमि।

(ख) मम जनकः मुम्बई नगरे वसति।

(ग) अत्र मम अनेकानि मित्राणि सन्ति

(घ) अहं मित्रैः सह क्रीड़ामि।

(ङ) मह्यं फलानि रोचन्ते।

(च) अहम् अवकाशेषु गृहं गच्छामि।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-16 चतुरः काकः

अभ्यासकार्यम्

1. (क) काकः रोटिकाखण्डं गृहीत्वा शाखायाम् उपविष्टः।

(ख) शृगालः उक्तवान् यत् भवान् तु अतीव सुंदरः अस्ति। अतीव च सुन्दरं गायति। कृपया एकं गीत गायतु।

(ग) काकः रोटिका खण्डं पादयोः अधः स्थापयित्वा शृगालम् उक्तवान् यत् भो! भवान् मम पूर्वजं मूर्खं कृतवान्। अतः मामपि मूर्खः विचिन्त्य भवान् एवं वदति। किं काकः अपि सुन्दरं गातुं शक्नोति? इति।

(घ) शृगालः ततः अतः पलायितः यतोहि तस्य धूर्तता समक्षम् आगता।

2. एकः नृपः आसीत्। सः एकदा एकं मयूरम् अपश्यत्। मयूरःअति सुन्दरःआसीत्। तत्र एकः लोमशा अपि आसीत्। लोमशा मयूरम् अकथयत् यत् भवतः नृत्यम् अति शोभनं भवति। कृपया नृत्यं दर्शयतु। मयूरः अकथयत् यत् त्वं मां मूर्खः मन्यसे।

3. (क) एषः आम्रस्य वृक्षः अस्ति।

(ख) हंसस्य वर्णः श्वेतः अस्ति।

(ग) गुरोः वचनं पालय।

(घ) मम पुस्तकं सुन्दरम् अस्ति।

4. विद्यार्थी स्वयं करें।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-17 व्यवहारोपयोगिनः शब्दाः

विद्यार्थी स्वयं करें।

हेनरी संस्कृत सुरभि-3

पाठ-1 ईशवन्दना

अभ्यासकार्यम्

1. (क) परमेश्वरः सर्वलोकानां सदा हितं करोति।

(ख) परमेश्वरः दुःखानि दूरी करोति।

(ग) गुरूः पापेभ्यः वारयति धर्मे च प्रयोजयति।

(घ) गुरूः ज्ञानं ददाति।

2. (क) नमामि, (ख) नमामि, (ग) वारयति, (घ) दूरी करोति सुखानि

3. (क) परमेश्वरः लोकस्य सदा हिंत करोति।

(ख) अहं परमेशं नमामि।

(ग) परमेश्वरः सर्वदा आनन्द स्वरूपः अस्ति।

(घ) गुरु: मानवाय ज्ञानं ददाति।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-2 प्रभातवेला

अभ्यासकार्यम्

1. (क) प्रात:काल: ब्रह्ममुहूर्त्त वेलायां चतुर्वाद नसमयात् आरभ्यते।
   (ख) अस्माभि: सदैव सूर्योदयात् पूर्वमेव उत्थात्व्यम्।
   (ग) ब्रह्ममुर्हूर्ते विद्यार्थिन: पठितपाठानाम् अभ्यासं कुर्वन्ति बहून् विषयान् च कण्ठीकुर्वन्ति।
   (घ) प्रभातवेलायां पक्षिण: मधुरेण कलरवेन शान्तं भूमण्डलं संगीतमयं कुर्वन्ति।
   (ङ) ओषजनवायुना लब्धशक्तय: जना: श्रान्तिं न अनुभवन्ति।
2. (क) सुषमा रमणीया, (ख) प्रभातवेला, (ग) प्रकृते:, (घ) व्यायामम्, स्वास्थ्यं, (ङ) सूर्योदयात्
3. (क) प्रात:कालीन सौंदर्य बहुत ही रमणीय होता है।
   (ख) सूर्योदय तक प्रभातवेला ही कहलाती है।
   (ग) प्रभातवेला में प्रकृति की शोभा भी बहुत मनोहारी होती है।
   (घ) प्रभातवेला में शुद्ध वायु में घूमने से स्वास्थ्य बढ़ता है।
   (ङ) हमें सदैव सूर्योदय से पहले ही उठना चाहिए।
4.

रजनी	दुर्गन्ध:
प्रात:	अधम:
सुगन्ध:	दिव
उत्तम:	सन्ध्या
मुदिता:	इति
अथ	दु:खिता:

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-3 कदा किं करणीयम्?

अभ्यासकार्यम्

1. (क) अहं प्रात:काले पञ्चवादने शय्या त्यजामि।
   (ख) अहं षट्वादने आचार्येण प्रदत्तं गृहकार्यं करोमि।
   (ग) व्यायामेन शरीरं पुष्टं निरोगं च भवति।
   (घ) अहं विद्यालये गुरुजनान् सादरम्, सश्रद्धं सविनयं च अभिवादयामि। अपरञ्च प्रार्थना प्रसंगे, अध्ययने, सांस्कृतिक कार्यक्रमे, क्रीडादिषु च सोत्साहं प्रतिभागं नयामि।
   (ङ) अहं विद्यालयं सार्धं अष्टवादने गच्छामि।
   (च) अहं दूदर्शने शिक्षाप्रदानि मनोरञ्जकानि कार्यक्रमाणि पश्यामि।
2. (क) त्यजामि, (ख) पुष्टं निरोगं, (ग) अभिवादयामि, (घ) अल्पाहारं दुग्धं, (ङ) स्वयम्
3. (क) अहं प्रात:काले पञ्चवादने उन्तिष्ठामि।
   (ख) अहं मातु: पितु: चारणयो: सादरं नमामि।
   (ग) अहम् ईश्वरं स्मरामि।
   (घ) व्यायामेनं शरीरं पुष्टं निरोगं च भवति।
   (ङ) अहं विद्यालयस्य कार्यकलापेषु उत्साहपूवकं भागं नयामि।
4. (क) **प्रात:काले** वातावरणम् अति सुन्दरं भवति।
   (ख) व्यायामेन शरीरं पुष्टं निरोगं **च** भवति।
   (ग) अहम् आचार्येण **प्रदत्तं** गृहकार्यं करोमि।
   (घ) गायन प्रतियोगितायां क: **प्रतिभाग:** नयति?
   (ङ) धेनो: **दुग्धं** मधुरं भवति।
   (च) अहं मध्याह्न काल **पर्यन्तम्** अध्ययनं करोमि।
   (छ) अहं स्वकार्यं स्वयम् **एव** करोमि।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-4 शरीरस्य अङ्गानि

अभ्यासकार्यम्

1. (क) शरीरे बहूनि अङ्गानि भवन्ति।
   (ख) मुखे दन्ता: भवन्ति।
   (ग) दन्तै: भोजनं चर्वन्ति।
   (घ) वयम् उद्यानं गच्छाम:।
2. (क) शरीरम्, (ख) शिर:, (ग) पादौ, (घ) देवपूजां, (ङ) पादाभ्यां, (च) केशै:
3. (क) शरीरे बहूनि अङ्गानि भवन्ति।
   (ख) सर्वोपरि शिर: स्थित: भवति।
   (ग) अधोभागे पादौ स्त:।
   (घ) शरीरस्य मध्यभागे उदरं वक्ष:स्थलं च स्त:।
   (ङ) वयं नेत्राभ्यां वस्तूनि पश्याम:।
4. (क) मुख से नीचे गर्दन है।
   (ख) फूलों से हम देवपूजा करते हैं।
   (ग) पीठ और हाथ आदि अंग हैं।
   (घ) नाक से हम फूल सूँघते हैं।
   (ङ) कानों से हम पाठ सुनते हैं।
5. ग्रीवा, कर्ण:, कपोल:, नासिका:, वक्ष:स्थलाम्, पाद:

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-5 अस्माकं देश:

अभ्यासकार्यम्

1. (क) गङ्गा नदी हिमालयात् नि:सरति।
(ख) भारतस्य दक्षिणभागे हिन्दमहासागर: अस्ति।
(ग) भारतस्यं उत्तरदिशायां पर्वतराज: हिमालय: अस्ति।
(घ) भारतस्य पूर्वदिशायां ब्रह्मदेश: अस्ति।

2. (क) तीर्थस्थानानि, (ख) भारतवर्ष:, (ग) भारतवर्ष:

3. (क) अयं मम प्रदेश: अस्ति।
(ख) भारत: महान् देश: अस्ति।
(ग) अहं भारतस्य रक्षक: अस्मि।
(घ) मम देशस्य नाम भारतवर्ष: अस्ति।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-6 नीति श्लोका:

अभ्यासकार्यम्

1. (क) स्वदेशे राजा पूज्यते।
(ख) फलिनो वृक्षा: गुणिनश्च जना: नमन्ति।
(ग) मक्षिका: व्रर्णमिच्छन्ति।

2. (क) नमन्ति गुणिनो जना:, शुष्क वृक्षाश्च मूर्खाश्च।
(ख) मध्यमा:, मानमिच्छन्ति मानो हि।
(ग) शान्तिमिच्छन्ति, पार्थिवा:।

3. (क) नृप: केवलं स्वदेशे पूज्यते।
(ख) उत्तमा: जना: मानमिच्छन्ति।
(ग) सज्जना: शान्तिमिच्छन्ति।
(घ) सर्वदा मधुरा वाणी वदेत्।

4. (क) **विद्वान्** सर्वत्र पूज्यते।
(ख) **शुष्कवृक्षा:** न नमन्ति।
(ग) सदा प्रियं **वक्तव्यम्**।
(घ) **सज्जना:** मानं प्राप्नुवन्ति।

5. (क) प्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति मानवा:।
तस्मात् तदैव वक्तव्यं वचने का
(ख) परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेषु य पश्यति स:

6. मूर्ख: + च, नृपत्वम् + च, धनम् + इच्छन्ति, कलहम् + इच्छन्ति, शुष्क + वृक्ष:

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-7 आदर्श: छात्र:

अभ्यासकार्यम्

1. (क) रमेश: तृतीय कक्षायां पठति।
(ख) रमेश: आदर्श: छात्र: अस्ति।
(ग) स: गुरुणाम् आज्ञां पालयति।
(घ) स: शिक्षकान् समादरति।
(ङ) स: क्रीडाक्षेत्रे क्रीडति।

2. (क) एक: आदर्श: छात्र:, (ख) क्रीडति, (ग) गुरुणाम्, (घ) श्रमशील:, (ङ) व्यायामं

3. (क) एष: क: अस्ति?
(ख) रमेश: तृतीय कक्षायां पठति।
(ग) स: गुरूणाम् आज्ञां पालयति।
(घ) स: क्रीडाक्षेत्रे क्रीडति।
(ङ) स: मातु: पितुश्च चरणयो: नमति।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-8 परोपकाराय मम जीवनम्

अभ्यासकार्यम्

1. (क) कृषक: हलेन क्षेत्रं कर्षति।
(ख) कृषक: जनेभ्य: अन्नानि वस्त्राणि च यच्छति।
(ग) सैनिक: नागरिकाणां सुरक्षां करोति।
(घ) जनानां रक्षा सैनिकस्य कर्तव्यम्।
(ङ) सरिताया: जलं सर्वेभ्य: प्राणिभ्य: अस्ति।

2. रिक्ता, मरणम्, दिवा, सायम्, कृष्ण:

3.

कृषका:	फलन्ति।
सरिता:	दिवानक्तं कार्यं कुर्वन्ति।
वृक्षा:	परोपकाराय सीमाप्रदेशं गच्छन्ति।
वीरा:	प्रवहन्ति।
सैनिका:	जीवन्ति।

4. (क) क: वृक्ष:, (ख) जनेभ्य:, (ग) छायां, (घ) जीवनम्, परोपकाराय

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-9 पितृभक्त: श्रवण:

अभ्यासकार्यम्

1. (क) श्रवणकुमार: पितृभक्त आतीत्।
(ख) वने श्रमणाकुमारस्य अन्धौ पितरौ अगच्छताम्।
(ग) राजा वृद्धम् अकथयत् यत् क्षम्यताम्! अज्ञानात् बाणेन तव निर्दोषं पुत्रं अहनम्।

(घ) वृद्धः राज्ञे शापम् अददात् यत् यथाअहं पुत्रशोकेन प्राणान् त्यजामि तथैव त्वमपि पुत्रवियोगात् मृत्युं प्राप्सयसि।

(ङ) श्रवणकुमारः नदी तीरं जलम् अनेतुम् अगच्छत्।

2. (क) पितृभक्तः, (ख) अयोध्यां, (ग) नद्याम्, (घ) निर्दोषं, (ङ) दशरथः

3. (क) श्रमणकुमारः मातृ पितृभक्तः आसीत्।

(ख) बाणेन श्रमणकुमारम् अहनत्।

(ग) तस्य पितरौ नेत्रहीनौ आस्ताम्।

(घ) गजः नद्यां जलं पिबति।

(ङ) आवां पिपासितौ स्वः।

4. (क) उसके माता-पिता बूढ़े और नेत्रहीन थे।

(ख) अज्ञानता के कारण बाण से तुम्हारे निर्दोष पुत्र को मार दिया।

(ग) हम दोनों प्यासे हैं।

(घ) तब घड़े का शब्द सुनकर राजा दशरथ ने ध्वनि-बाण फेंका (चलाया)।

(ङ) कोई हाथी नदी पर जल पी रहा है।

(च) वे घूमते हुए अयोध्या के पास गए।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-10 संस्कृतभाषा

अभ्यासकार्यम्

1. (क) संस्कृत भाषा परिष्कृता परिशुद्धा, मधुरा सरला च अस्ति।

(ख) ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः अथर्ववेदश्च विश्वस्य आदिग्रन्थाः अस्ति।

(ग) संस्कृत भाषा सर्वासां भाषायां जननी मन्यते।

(घ) पुरा संस्कृतस्य अध्ययनार्थं बालकाः गुरुकुले गच्छन्ति स्म।

(ङ) भारतस्य प्राणभूता संस्कृत भाषा अस्ति।

2. (क) साहित्यम्, सरसं, (ख) संस्कृत, (ग) भाषायाः, अतीव, (घ) धारयतेति, (ङ) सिद्धयतीति।

3. (क) संस्कृताभाषा विश्वस्य सर्वासु भाषासु प्राचीना अस्ति।

(ख) मानवीयगुणानां संस्काराणां च उन्नतेः स्थानं संस्कृतभाषा एव अस्ति।

(ग) संस्कृतभाषा सर्वभषाणां जननी मन्यते।

(घ) विश्वे षोडश संस्काराः भवन्ति।

4. (क) सज्जनानां सदुपदेशः अस्माभिः सदैव **अनुकरणीयः**।

(ख) संस्कृत भाषा **विश्वस्य** सर्वासुः भाषासु प्राचीनतमा अस्ति।

(ग) संस्कृतभाषा **गीर्वाणभारती** अपि कथ्यते।

(घ) संस्कृत **भाषायाः** साहित्यम् अतीव सरसं वर्तते।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-11 एकः परिवारः (संख्यावाची-प्रयोग)

अभ्यासकार्यम्

1. (क) अत्र एकः परिवारः अस्ति।

(ख) परिवारे पञ्च सदस्याः सन्ति।

(ग) कुक्कुरः द्वारे स्थित्वागृहं रक्षति।

(घ) अद्य एषः परिवारः गृहप्रवेशाय नवग्रहपूजनं करोति।

(ङ) रावणस्य दशमुखानि सन्ति।

2. (ख) कति, (ग) कं, (घ) कस्य, (ङ) का

3. (क) ii, (ख) iii, (ग) i, (घ) v, (ङ) iv

4. (क) परिवार में पाँच सदस्य हैं।

(ख) इस घर में एक परिवार रहता है।

(ग) मेरी दस उँगलियाँ और दो पैर हैं।

(घ) यहाँ अट्ठारह लड्डू हैं।

(ङ) ग्रह नौ होते हैं।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-12 असमीक्ष्य न कर्त्तव्यम्

अभ्यासकार्यम्

1. (क) ब्राह्मणः कौशलदेशे वसति स्म।

(ख) जलाय तडागं ब्राह्मणी अगच्छत्।

(ग) नकुलः सर्पेण सह युद्धम् अकरोत्।

(घ) स्वयमेव अविचार्य नकुले मारिते ब्राह्मणी दुखिता अभवत्।

(ङ) किमपि कार्यम् अविचार्य न करणीयम्।

2. (क) जलाय, (ख) तडागं, (ग) लिप्तम्, (घ) खण्डशः, (ङ) नकुलम्

3. बिना सोचे-समझे कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए,
जो भी करना है, सोच-समझ करना चाहिए।
Do not do any work without consideration.
Do what you want to do after thinking a lot.

4. सुफलिताः, मधुराणि, सुन्दरम्, आदर्शाः, उन्नतः, पुष्पिता।

5. (क) दधि + आनय (ख) तस्य + उपरि
(ग) श्री + ईशः (घ) नकुलः + अपि

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-13 मम धेनुः

अभ्यासकार्यम्

1. (क) धेनुः चणकान्, खलिं हरित तृणानि च खादति।

(ख) गोमयं पवित्रं मन्यन्ते।

(ग) धेनो: दुग्धं पीत्वा बालका: पुष्टा भवन्ति।

(घ) गोमयेन स्त्रिय: स्वगृहं लेपयन्ति।

2. (क) पशु:, (ख) पुष्टा:, (ग) गोमयम्, (घ) मातृवत्

3. (क) इयं मम धेनु: अस्ति।

(ख) धेनु: तृणं खादति।

(ग) धेनुवत्सा: हलेन क्षेत्राणि कर्षन्ति।

(घ) सर्वे जना: धेनुं माता इव मन्यन्ते।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-14 सुभाषितानि

अभ्यासकार्यम्

1. (क) कष्ठस्य भूषणं सत्यम् अस्ति।

(ख) सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धं व्यजति पण्डित:।

(ग) क्षणश: कणश: विद्यामर्थं च चिन्तमेत्।

(घ) अभिवादनशीलस्य आयु:, विद्या, यश: बलं च: वर्धन्ते।

(ङ) सर्वतीर्थं मयी मातरं सर्वदेवमयं पितरं च सर्वयत्नेन पूजयेत्।

2. (क) सर्वनाशे, (ख) विद्या, कणत्यागे कुतो, (ग) तिष्ठति, बान्धव:, (घ) मूर्खाश्च, (ङ) दानं, कण्ठस्य

3. (क) iii, (ख) iv, (ग) ii, (घ) i

4. (क) हस्तकर्णयो: भूषणे दानं तथा सत्यं स्त:।

(ख) विद्याप्राप्तयै प्रतिपलस्य सदुपयोग: कर्तव्य:।

(ग) शत्रुसङ्कट उपस्थिते य: सह तिष्ठति, स एव सन्मित्रं भवति।

(घ) वृद्धोपसेविन: चत्वारि वस्तूनि वर्धन्ते।

(ङ) शुष्क वृक्ष: कदापि न नमति।

(च) मातु: पितुश्च सर्वप्रकारेण सेवा कर्तव्या।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-15 प्रथमा महिलाप्रधानमंत्री

अभ्यासकार्यम्

1. (क) इन्दिराया: जन्म प्रयागनगरे 1917 तमे ईसवी ये वर्षे अभवत्।

(ख) इन्दिराया: माता कमलादेवी आसीत्।

(ग) इन्दिरागांधी शान्ति निकेतने विश्वभारती विश्वविद्यालये शिक्षाम् अलभत्।

(घ) इन्दिरागांधी श्रीलालबहादुर शास्त्रिण: देहावसानानन्तरं प्रधानमन्त्रिपदं प्राप्तवती।

2. (क) अति गम्भीरा, (ख) लन्दननगरे, (ग) अनेकानि, कार्याणि, (घ) राष्ट्रनेत्री, देशस्य

3. (क) इन्दिरागांधी भारतस्य प्रथमा महिला प्रधानमन्त्रि आसीत्।

(ख) तस्या: विवाह: फिरोजगांधी महादेयेन सह अभवत्।

(ग) इन्दिरागांधी स्वपित्रा सह देशविदेशस्य यात्राम् अकरोत्।

(घ) श्रीराजीवगांधी इन्दिरा गान्धिन: ज्येष्ठ:पुत्र: आसीत्।

4. (क) एकेन पारसी**युवकेन** सह इन्दिराया: विवाह: अभवत्।

(ख) इन्दिराया: जन्म **प्रयागनगरे** अभवत्।

(ग) **विश्वकवे:** रवीन्द्रनाथटैगोरस्य सन्निधौ अपि इन्दिरा शिक्षाम् अलभत्।

(घ) इन्दिरा **मन्त्रिमण्डले** सूचना प्रसारण मन्त्रिपदमपि अलंकृतवती।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-16 वार्तालाप:

अभ्यासकार्यम्

1. (क) सौरभ: दूरदर्शनं द्रक्ष्यति।

(ख) वसीम: आगरानगरं ताजमहलस्मारकं द्रष्टुं गमिष्यति।

(ग) ताजमहल: आगरानगरे स्थित: अस्ति।

(घ) वैभव: तरणम् अवगमिष्यति।

2. (क) वार्तां, (ख) दूरदर्शनं, (ग) मनोरञ्जकं, (घ) तरणतालम्

3. पठिष्यति, पास्यथ:, लिखिष्यन्ति, खादिष्यथ, धाविष्यसि, हसिष्याव:, क्रीडिष्यसि, भविष्याम:

4. स् + अ + म् + य् + अ + क्

व् + य् + आ + य् + आ + म् + अ् + म्

क् + आ + र् + य् + अ + म्

छ् + आ + त् + र् + आ + अ:

ज् + ञ् + आ + त् + अ + म्

श् + अ + य् + अ + न् + अ + म्

5.

पुल्लिङ्गम्	**स्त्रीलिङ्गम्**
छात्र:	छात्रा
पितामह:	पितामही

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-17 व्याकरणम्

विद्यार्थी स्वयं कीजिए।

हेनरी संस्कृत सुरभि-4

पाठ-1 सरस्वती वन्दना

अभ्यासकार्यम्

1. (क) सुरमुनय: सरस्वत्या: चरणौ प्रणमन्ति।
   (ख) वाणी देवी सरस्वती अस्ति।
   (ग) **अनुवाद**-चंद्रमा की शीतल, सफेद और कोमल किरणों के समान श्वेत राजहंस पर विराजमान हे सरस्वती देवी! हमारी मंदता को दूर करके हमें प्रगति के पथ का ज्ञान कराइए। श्वेत कमल पर वास करने वाली पवित्र देवी माँ! आपकी विजय होवे।
2. (क) जय **जय हे भगवति सुर भारति!**
   (ख) **तव चरणौ** प्रणमाम:।।
   (ग) **नादब्रह्ममयि** जय **वागेश्वरि।**
   (घ) शरणं **ते गच्छाम:।।१।।**
3. सरस्वती देवी, चरण-कमल, धारण करने वाली, जड़ता, बुराइयों को दूर करने वाली, सरस्वती देवी।
4. (क) हे देवी सरस्वती! तुम्हारे चरणों में प्रणाम करते हैं।
   (ख) नौ रसों से भी मधुर कविता से मुखरित।
   (ग) चंद्रमा की शीतल, सफेद और कोमल किरणों के समान मनरूपी हंस पर विराजमान हो जाओ।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-2 सदाचार:

अभ्यासकार्यम्

1. (क) सज्जनानाम् आचार: सदाचार: कथ्यते।
   (ख) मूर्खै: सह मित्रतां न कुर्यात्।
   (ग) मानव: प्रयत्नेन ब्रह्मचर्यं पालयेत्।
   (घ) निर्धनेभ्य: दानं यच्छेत्।
   (ङ) शिष्टाचारेण मानवा: अति सुखं लभन्ते।
2. (क) त्यजेत्, (ख) सद्भावेन, (ग) बालोऽपि, (घ) नियमानां, (ङ) असत्यं
3. (क) सज्जनों द्वारा किया गया आचरण, सदाचार कहलाता है।
   (ख) मूर्खों के साथ मित्रता नहीं करनी चाहिए।
   (ग) कभी भी किसी को भी अपशब्द नहीं बोलने चाहिए।
   (घ) शिष्टाचार से मनुष्य बहुत सुख प्राप्त करते हैं।
   (ङ) मनुष्य को प्रयत्नपूर्वक ब्रह्चर्य का पालन करना चाहिए।
4. (क) स्वदेशाय, धर्माय:,कुलाय प्राणान् अपि त्यजेत्।
   (ख) ईश्वरं भजेत् मधुरं च वदेत्।
   (ग) धनोपार्जनाय विद्योपार्जनाय च प्रयत्नं कुर्यात्।
   (घ) सर्वदा निर्धनेभ्य: दु:खितेभ्यश्च दानं यच्छेत्।
5. (क) सर्वदा सत्यं वदेत्।
   (ख) सर्वे: सह सभ्यतया व्यहर्तव्यम्।
   (ग) कदापि कमपि अपशब्दं न वक्तव्यम्।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-3 प्रयत्नशील: एव जयति

अभ्यासकार्यम्

1. (क) शशक: वने निवसति स्म।
   (ख) शशक: शीघ्रं चलति।
   (ग) शशक: अवदत् यत् अहम् अपरे तडागं गच्छामि।
   (घ) मन्दं-मन्दं कच्छप: चलति।
   (ङ) निरन्तरं प्रयत्नशील: एव जयति।
2. (क) सप्तमी, (ख) प्रथमा, (ग) तृतीय, (घ) प्रथमा, द्वितीया, (ङ) षष्ठी
3. (क) अहं वेगेन चलामि।
   (ख) त्वं मन्दं मन्दं चलसि।
   (ग) कच्छप: शनै: चलति।
   (घ) शशक: श्रान्तो भूत्वा सुप्त:।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-4 खगानां संसार:

अभ्यासकार्यम्

1. (क) मयूरस्य पक्षा: चित्रवर्णा: सन्ति।
   (ख) मयूरस्य कष्ठ: नीलवर्ण: मनोहरश्च अस्ति।
   (ग) काक: कृष्ण: अस्ति।
   (घ) पिक: सुमधुरं कूजति।
   (ङ) शुक: मधुराणि फलानि खादति।
   (च) बक: श्वेत: भवति।
   (छ) हंसस्य गति: शोभना अस्ति।
2. (क) उपवनेषु, (ख) सुमधुरं, (ग) मधुर:, (घ) शोभना, (ङ) सर्पं, (च) मत्स्यान्, (छ) हंस:
3. (क) ✗, (ख) ✓, (ग) ✓, (घ) ✓, (ङ) ✗, (च) ✗

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-5 वीरः बालः अभिमन्युः

अभ्यासकार्यम्

1. (क) अभिमन्युः अर्जुनस्य पुत्रः आसीत्।
   (ख) कौरव सेनापतिना: द्रोणाचार्येण चक्रव्यूहः रचितः।
   (ग) पाण्डवानां चिन्तायाः कारणम् इदम् आसीत् यत् चक्रव्यूह भेदनकलाम् पाण्डवपक्षे अर्जुनं विना कोऽपि न जानाति स्म।
   (घ) वीरवरस्य अभिमन्योः पराक्रमेन छिन्नं-भिन्नं चक्रव्यूहं दृष्ट्वा कौरवाः भयभीताः जाताः।
   (ङ) कौरवाः धर्मयुद्धं विहाय निःशस्त्रं बालम् मिलित्वा अहनन्।
2. (क) सभी पांडव चिंताग्रस्त हो गए।
   (ख) मैंने यह विद्या पढ़ी।
   (ग) मैं युद्धक्षेत्र में जाऊँगा।
   (घ) चक्रव्यूह छिन्न-भिन्न हो गया।
3. (क) अभिमन्युः अर्जुनस्य पुत्रः आसीत्।
   (ख) अर्जुनस्य भार्यायाः नाम सुभद्रा आसीत्।
   (ग) किं त्वं जानासि?
   (घ) गच्छ! विजयी भव!

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-6 पिपासु काकः

अभ्यासकार्यम्

1. (क) काकः पिपासया पीडितः आसीत्।
   (ख) काकः उद्याने वृक्षस्य अधः एकं जलकुम्भम् अपश्यत्।
   (ग) शनैःशनैः जलम् उपरि आगच्छत्।
   (घ) काकः अचिन्तयत् यत् अहो। मम उद्यमस्य एव फलमिदम्। ये प्राणिनः संसारे उद्यमं कुर्वन्ति, ते एव सफलाः भवन्ति।
2. (क) काकः, पिपासया, (ख) जलं, (ग) पाषण खण्डाः, (घ) यथेच्छं, (ङ) संसारे, सफलाः
3. (क) किंतु जल पाने में सफल नहीं हुआ।
   (ख) वह घड़े के पास गया।
   (ग) वह बहुत निराश हुआ।
   (घ) तब कौए ने इच्छानुसार जल पिया।
   (ङ) उस जल के घड़े में थोड़ा ही जल था।
4. (क) जलाय सः इतस्ततः अभ्रमत्।
   (ख) जलकुम्भं दृष्टवा सः बहुप्रसन्नः अभवत्।
   (ग) घटे जलं स्वल्पम् आसीत्।
   (घ) ये परिश्रमं कुर्वन्ति ते एव सफलाः भवन्ति।
   (ङ) सः अति निराशः अभवत्।
5.

संस्कृत	अंग्रेजी
(क) काकः	Crow
(ख) उद्यानम्	Garden
(ग) जलम्	Water
(घ) कुम्भः	Pitcher

6. (क) एकदा **ग्रीष्मर्तौ** एकः काकः पिपासया व्याकुलः अभवत्।
   (ख) वृक्षस्य **अधः** एकः जलकुम्भः आसीत्।
   (ग) काकः जलम् अप्राप्य **निराशः** अभवत्।
   (घ) जीवने **उद्यमः** अति आवश्यकः अस्ति।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-7 होलिकोत्सवः

अभ्यासकार्यम्

1. (क) होलिकोत्सवः फाल्गुन मासस्य पूर्णिमायां चैत्रमासस्य प्रतिपदायां भवति।
   (ख) हिरण्यकशिपोः भगिनी होलिका आसीत्।
   (ग) द्वितीयदिवसे रंगक्रीडा भवति।
   (घ) प्रथमदिवसे रात्रौ होलिकादाहः क्रियते।
2. (क) वसन्तस्य, (ख) अनेकाः, (ग) दैत्यराज, (घ) विजयः, (ङ) अङ्के
3. (क) मारने के लिए, (ख) जल गई, (ग) वायु, (घ) गोद में, (ङ) बहिन (च) किसी मासकी प्रथम तिथि
4. (क) उनमें होली का उत्सव महान उत्सव है।
   (ख) प्रहलाद दैत्यराज हिरण्यकश्यप का पुत्र था।
   (ग) शीतल, मंद और सुगंधित वायु बहती है।
   (घ) सभी लोग नाचते हैं और परस्पर मिलते हैं।
   (ङ) इस दिन हर्षोल्लास का साम्राज्य होता है।
5. (क) वसन्त ऋतौ सुगन्धितः वायुः **बहति**।
   (ख) उपवने नानावर्णानि पुष्पाणि **विकसन्ति**।
   (ग) आम्र वृक्षेषु कोकिलाः **कूजन्ति**।
   (घ) इमे बालकाः बुद्धिमन्तः **सन्ति**।
   (ङ) होलिकोत्सवे हर्षोल्लासस्य साम्राज्यं **भवति**।
6. (ख) होलिका अग्निं प्रविशति।
   (ग) सःप्रहलादं हन्तुं प्रयत्नं करोति।
   (घ) अधर्मस्य उपरिधर्मस्य विजयः भवति।
   (ङ) होलिका तस्य भगिनी अस्ति।
   (च) आम्रेषु कोकिलाः कूजन्ति।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-8 विद्याधनं सर्वधनं प्रधानम्

अभ्यासकार्यम्

1. (क) विद्या विनयं ददाति।
   (ख) नक्षत्राणां भूषणं चन्द्र:।
   (ग) सर्वस्य भूषणं विद्या ।
   (घ) भार्या गृहेषु मित्रम्।
2. (क) भुविभार भूता:, (ख) विशाल कुल सम्भवा:, (ग) विनयं विनयाद् याति पात्रताम्, (घ) न च राजहार्यम्
3. (क) धरा पर, (ख) पशु, (ग) गंध रहित, (घ) टेसू के फूल

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-9 कृषकाः

अभ्यासकार्यम्

1. (क) अस्माकं देशे अनेके कृषका: निवसन्ति।
   (ख) अधिकांशा: भारतीया: ग्रामेषु निवसन्ति।
   (ग) कृषकेभ्य: उर्वरकं प्रशासन: ददाति।
2. (क) उत्पादयन्ति, (ख) च कुर्वन्ति, (ग) प्रशासन: अपि, (घ) ग्रामपञ्चायत समिति, (ङ) अन्नस्य संग्रहं, (च) कृषका: क्षेत्रे अन्नम् उत्पादनं कृत्वा तत् सहकारी समिति, नीत्वा
3. (क) कृषका: कृषिकार्यं पशुपालनं च कुर्वन्ति।
   (ख) कृषका: आधुनिकयन्त्राणां सहाय्येन कृषिकार्यं कुर्वन्ति।
   (ग) कृषकाणां अत्यन्तं महत्त्वम् अस्ति।
   (घ) कृषकान् एव अन्नदाता मन्यन्ते।
   (ङ) अन्नम् उत्पाद्य कृषका: जीवनरक्षणं कुर्वन्ति।
4. (क) जीवन रक्षणे कृषकाणाम् अपि बहु **महत्त्वम्** अस्ति।
   (ख) कृषका: **अन्नम्** उत्पादयन्ति।
   (ग) कृषका **पशूनां** सहाय्येन कृषिकार्यं कुर्वन्ति।
   (घ) कृषका: क्षेत्रात् **खरपतवारं** निस्सारयन्ति।
   (ङ) ते स्व अन्नं सहकारी समिति केन्द्रे नीत्वा **विक्रयं** कुर्वन्ति।
5. (क) वे दो बैलों को जोड़कर खेत जोतते हैं।
   (ख) पशुओं के आहार की व्यवस्था करते हैं।
   (ग) खेत में जाकर खेत से खरपतवार निकालते हैं।
   (घ) प्रशासन किसानों का सहयोग करता है।
   (ङ) सभी लोगों के लिए अन्न उगाकर जीवन रक्षा करते हैं।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-10 चतुरः वानरः

अभ्यासकार्यम्

1. (क) वानर: एकस्या: नद्या:तटे एकस्मिन् जम्बूवृक्षे वसति स्म।
   (ख) वानरस्य मैत्री एकेन मकरेण सह अभवत्।
   (ग) मकरपत्नी मकरं वानरस्य हृदयम् आनेतुम् अवदत्।
   (घ) वृक्षमारूह्य वानर: अवदत् यत् मूर्ख अपि हृदयं शरीरात् पृथक् भवति? गच्छ, आवयो: मैत्री समाप्ता।
2. (क) शनै: शनै: **मकर:** वानरस्य मित्रम् अभवत्।
   (ख) मकरस्य **भार्या** वानरस्य हृदयं खादितुम् ऐच्छत्।
   (ग) इमानि **जम्बूफलानि** तु अतीव मधुराणि सन्ति।
   (घ) किं त्वम् ईदृशानि मधुराणि फलानि **प्रतिदिनम्** आनेष्यसि।
3. (क) शीला तस्य पुत्री अस्ति।
   (ख) स: बहूनि फलानि आनयत्।
   (ग) ते तय क्रीडन्ति।
   (घ) सर्वे शिशव: नृत्यन्ति।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-11 सन्मित्रम्

अभ्यासकार्यम्

1. (क) सुदामा श्रीकृषणेन सह अपठत्।
   (ख) श्रीकृष्ण: तेन सह सन्मित्रमिव व्यवहारम् अकरोत्।
   (ग) सुदामा अकथयत् यत् मित्र! तव स्नेहेन अहं कृतकृत्य: अस्मि। त्वया सह मम अध्ययनम् अद्य सफली भूतम् ।
   (घ) कृष्ण: उत्तरम् अयच्छत् यत् अहमपि त्वां सख्यरुपेण प्राप्य कृतकृत्य: अस्मि।
2. (क) नाथ:, (ख) अन्वेषणम्, (ग) अकुरुतम्, (घ) आसीत्, (ङ) प्रसन्नोऽस्मि, (च) आगच्छत्
3. (क) मयूरा: वने अनृत्यन्।
   (ख) आवां वने बहुकालम् भ्रमाव।
   (ग) आवां विद्यालये संस्कृतम् अपठाव।
   (घ) आवयो: परिश्रम: अद्य सफलीभूत:।
   (ङ) यमुनातटे खगा: कलरवम् अकुर्वन्।
4. (क) आवां गुरुकुले अवसाव।
   (ख) आवां वने अगच्छाव।
   (ग) आवां सहैव पुष्पचयनम् कुर्व।
   (घ) आवां सहैव अपठाव।
   (ङ) किं तौ गृहे अगच्छताम्?
   (च) किं बालका: पठनाय पुस्तकालये अगच्छन्?
   (छ) नहि, ते क्रीडनाय क्षेत्रे अगच्छन्।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-12 महात्मा बुद्धः

अभ्यासकार्यम्

1. (क) सिद्धार्थस्य पिता नृपति: शुद्धोधन: आसीत्।
   (ख) सिद्धार्थस्य माता मायादेवी आसीत्।
   (ग) देवदत्त: सिद्धार्थस्य भ्राता आसीत्।
   (घ) बिद्ध हंस: सिद्धार्थस्य समीपे गत:।
   (ङ) देवदत्त: हंसं शरेण अविध्यत्।
2. (क) कपिलवस्तु, (ख) कन्दर्प, (ग) भ्रमणाय, (घ) पत्नीं पुत्रं च, वनं, (ङ) राहुल:
3. (क) ✗, (ख) ✓, (ग) ✗, (घ) ✗, (ङ) ✓

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-13 लोभः पापस्य कारणम्

अभ्यासकार्यम्

1. (क) सिंह: वने वसति स्म।
   (ख) नद्या: तीरे सिंह: तिष्ठति।
   (ग) सिंह: तत्र एकं स्वर्णकङ्कणं पथिकान् दर्शयित्वा तान् लोभयते स्म।
   (घ) तत्र एक: लुब्ध: ब्राह्मण: आयात:।
   (ङ) पान्थेन आलोचितम् यत् भग्येनैतत् सम्भवति। परम् अत्र आत्मसन्देहे प्रवृत्तिर्न विधेया।
   (च) सिंह: हस्तं प्रसार्य स्वर्णकङ्कणम् अदर्शयत्।
   (छ) व्याघ्रेण पङ्के पतित: लुब्ध: ब्राह्मण: धृत:।
   (ज) लुब्ध: ब्राह्मण: सरसि स्नातुं प्रविष्ट:।
   (झ) लुब्ध: ब्राह्मण: महापङ्के निमग्न:।
2. (क) वृद्ध:, (ख) तस्मिन्, (ग) परम् अत्र आत्मसन्देहे, (घ) मारात्मके त्वायि, (ङ) पुत्रा: दारा: च, (च) धर्मशास्त्राणि, (छ) वेदाध्ययनं
3. (क) ✓, (ख) ✗, (ग) ✓, (घ) ✓, (ङ) ✓, (च) ✗, (छ) ✓
4. (क) तस्मिन् वने अनेके हिंसक: **प्राणिन:** आसन्।
   (ख) सिह: आखेटनाय **असमर्थ:** आसीत्।
   (ग) नद्या: **तीरे** स: सिह: वसति स्म।
   (घ) एकदा एक: **पथिक:** तत्र आगच्छति।
   (ङ) सिंह: तमपि **लोभयिंतु** स्वर्ण कङ्कणं दर्शयति।
   (च) सिंह: पथिकान् आकर्षयितु **यतते** स्म।
   (छ) भो! **गृहाण** इदं स्वर्णकङ्कणम्।
5. (क) अहं द्विचक्रिकया विद्यालयं गच्छामि।
   (ख) पार्वती उद्यानम् अगच्छत्।
   (ग) बालका: क्षेत्रे क्रीडन्ति।
   (घ) वानरा: वृक्षेषु स्वपन्ति।
   (ङ) बाल: रात्रौ दुग्धम् अपिबत्।
   (च) विद्यालये पञ्चादश बालिका: पठन्ति।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-14 पत्रम्

अभ्यासकार्यम्

1. (क) अविनाश: भ्रमणाय स्व पितृभ्यां सह विदेशमगच्छत्।
   (ख) ते रेलयानेन सर्वत्र अभ्रमन्।
   (ग) अविनाश: तत्र अनुभवति यत् अस्माकं देशोऽपि अमेरिकादेशवत् स्वच्छ: भवेत्।
   (घ) तत्रत्य मार्गा: स्वच्छा: सुन्दरा: च सन्ति।
   (ङ) वयं स्वकर्तव्यस्य निर्वाहं पूर्णनिष्ठया करवाम।
2. (क) वायुयानम्, (ख) मालायै, (ग) रेलयानेन, (घ) देवालयं, (ङ) ईश्वरं
3. (क) बातचीत मत करो।
   (ख) सीता राम के साथ वन को गईं।
   (ग) छात्र गुरुजी को नमन करते हैं।
   (घ) तुम कक्षा की ओर जाओ।
   (ङ) मैं वृक्ष पर चढ़ता हूँ।
4. (क) तथैव (ख) दृष्ट्वाऽहम्
   (ग) येन + अस्माकम् (घ) ग्रीष्म + अवकाशे
   (ङ) कुशलीति

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-15 स्मरणीयाः श्लोकाः

अभ्यासकार्यम्

1. (क) अतिथि:, बालक:, पत्नी, जननी, जनकस्तथा, एते पञ्च गृहिण: पोष्या: सन्ति।
   (ख) अन्यायोपार्जितं वित्तं दश वर्षाणि तिष्ठति।
   (ग) प्रत्यक्षे दासभृत्या: परोक्षे च मित्रबान्धवा: स्तुत्या: सन्ति।
   (घ) रोदनं बालानां-बलम् अस्ति।
2. (क) य: न्यायमार्गं त्यजति, स: नरक गच्छति।
   (ख) चौरा: सदा असत्यं वदन्ति।
   (ग) दुबलानां बलं राजा भवति।
   (घ) विद्या धर्मेण सुशोभते।
3. (क) अन्यायेन उपार्जितं वित्तं शीघमेव **विनश्यति**।

(ख) नृप: याचकाय यथेच्छं धनं **प्रयच्छति**।

(ग) राजा सभाम् आगत्य सिंहासने **विराजते**।

(घ) एकस्मिन् **वर्षे** द्वादशमासा: भवन्ति।

(ङ) **मूर्खस्य** बलं मौनं भवति।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-16 दूरदर्शनम्

अभ्यासकार्यम्

1. (क) अनेके अविष्कारा: सन्ति विज्ञानस्यं, तद्यथा, दूरदर्शनम्, शीतकयन्त्रम्, व्यजनम्, संगणकयन्त्रम् इत्यादिकम्।

(ख) दूरदर्शने देशविदेशानां घटना:, विभिन्ना: क्रीडाप्रतियोगिता:, नाटकानि, चलचित्राणि, गणतंत्र-स्वतन्त्रता दिवसयो: प्रत्यक्ष प्रसारणं पश्यन्ति।

(ग) दूरदर्शनम् एकं श्रेष्ठं यन्त्रम् अस्ति।

2. (क) विज्ञानस्य, (ख) आविष्कारा:, (ग) दूरदर्शनं, (घ) समाचाराणां देशविदेशाणां स्थितीनां, (ङ) यन्त्रम्

3. (क) दूरदर्शनं शिक्षाया: अपि साधनम् अस्ति।

(ख) इदं विज्ञानस्य युगम् अस्ति।

(ग) उपग्रहेण क्रीडाया: प्रत्यक्षं प्रसारणं भवति।

(घ) अद्य रविवासर: अस्ति।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-17 चतुर: काक:

अभ्यासकार्यम्

1. (क) वने एक: वटवृक्ष: आसीत।

(ख) नद्यां स्नानाय एक: राजपुत्र: आगच्छत्।

(ग) वृक्षस्य शाखायां काकदम्पती अवसताम्।

(घ) सर्पं सैनिका: अमारयन्।

(ङ) बुद्धिकौशलेन कठिनमपि कार्यं सम्भवम्।

2. (क) शााखायां, काकदम्पती, (ख) काकशावकान्, (ग) राजपुत्रं, (घ) बुद्धिकौशलेन, सम्भवम्

3. (क) एक जंगल में एक बरगद का पेड़ था।

(ख) उस पेड़ की जड़ में एक साँप भी रहता था।

(ग) उसके बाद वे दोनों सुख से रहने लगे।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-18 गङ्गा

अभ्यासकार्यम्

1. (क) गङ्गा नदी सर्वासु नदीषु श्रेष्ठा, पवित्रा पूज्या च अस्ति।

(ख) गङ्गाया: जलं शीतलं, पवित्रं स्वच्छं च अस्ति।

(ग) भगीरथो नाम्न: एक राजा स्वपूर्वजानाम् उद्धराय तपस्यां कृत्वा गङ्गां भूमौ आनयत् अतएव गङ्गां 'भगीरथी' इति नाम्ना प्रसिद्धा।

(घ) भारतस्य निवासिन: पर्वेसु गङ्गाया: जले आत्मानं पावयन्ति देवानां पूजायै च मन्दिरेषु यान्ति।

2. हरिद्वार, प्रयाग और वाराणसी में लोग गंगाजल में मृतकों की अस्थियाँ डालते हैं, मानते हैं कि इससे मनुष्य की मुक्ति होती है और स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

In Haridwar, Prayag and Varanasi people immersed the ashes of their near and dear ones in the water of Ganges. They believe that by this human beings attain salvation and they move to heaven.

3. (क) नदीषु, (ख) गङ्गाया:, (ग) तीर्थस्थानानि, (घ) मन्दिरेषु

4. (क) इयं गगा अस्ति।

(ख) गङ्गाया: जलं पवित्रं भवति।

(ग) गङ्गायै नम:।

(घ) गङ्गां राजा भगीरथ: भूमौ अनायत्।

5. (क) विश्वस्या सर्वासु नदीषु गङ्गा एका पवित्रा नदी अस्ति।

(ख) इयं नदी 'भगीरथी' इति नाम्ना अपि प्रसिद्धा अस्ति।

(ग) गङ्गा हिमालयस्य गङ्गोत्री, इति स्थानात् निस्सरति।

(घ) गङ्गाया: तटे ऋषिकेश:, हरिद्वार:, वाराणसी आदिनि नामकानि तीर्थस्थानानि सन्ति।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-19 महाराणा प्रताप:

अभ्यासकार्यम्

1. (क) वीरा: स्वतन्त्रताप्राप्त्यै आजीवनं संघर्षम् अकुर्वन्।

(ख) उदयसिंह: चित्तौड़गढ़स्य राजा आसीत् ।

(ग) राणा प्रतापस्य पिता महाराजउदयसिंह: आसीत्।

(घ) देहल्या: शासक: नृप: अकबर: आसीत्।

(ङ) प्रताप: प्राणेभ्योपि अधिकं स्वराज्यं मन्यते स्म।

2. (क) अनेका: वीरपुरुषा:, (ख) महाराणा प्रताप:, (ग) निर्भीक:, (घ) वाण्या, (ङ) महाराणा प्रताप:

3. (क) ✓, (ख) ✗, (ग) ✓, (घ) ✗, (ङ) ✓

4. (क) स: गुरो: सम्मानं करोति।

(ख) धर्मेण हीन: नर: पशु इव भवति।

(ग) भक्ताय भक्ति रोचते।

(घ) स: गुरुणा अस्त्रविद्यां शिक्षते।

(ङ) वयं भारतमातरं नमामः।

5. (क) वीर प्रताप पर्वत-गुफाओं में निवास करते थे।

(ख) चित्तौड़गढ़ के राजा उदयसिंह थे।

(ग) उस समय दिल्ली का राजा अकबर था।

(घ) अनेक शासकों को अकबर ने धन से आकर्षित कर लिया।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-20 व्याकरणम्

विद्यार्थी स्वयं कीजिए।

हेनरी संस्कृत सुरभि-5

पाठ-1 वन्दना

अभ्यासकार्यम्

1. (क) परमपिता परमेश्वरः अदिदेवः।

(ख) जीवने यदायाति तस्माद्धिकं प्रदेयम्।

(ग) जीवने वयं यापि ज्ञानादिकं प्राप्नुमः तस्माद्धिकंम् अन्येभ्यः सुपात्रेभ्यः प्रयच्छेम्।

(घ) भगवान् विष्णुःशेषनागशय्यायां शेते।

(ङ) भगवतः विष्णोः वर्णं मेघसदृशं वर्तते।

2. (क) त्वमादिदेवः, त्वमस्य विश्वस्य, (ख) यावदादानं, ततोऽधिकम्, (ग) प्रार्थनास्माकं भगवन्!, (घ) शान्ताकारं भुजगशयनं

3. त्वम् + आदिदेवः, वेत्ता + असि, यावत् + आदानम्, इति + एषा, विश्व + आधारम्, शुभ + अङ्गम्

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-2 कक्षाशिष्टाचारः

अभ्यासकार्यम्

1. (क) आज सोलह तारीख और सोमवार है।

(ख) अब हम संस्कृत पढ़ेंगे।

(ग) अपनी-अपनी पुस्तकें खोलो।

(घ) अपनी अभ्यास-पुस्तिकाएँ खोलें और लिखें।

(ङ) श्रीमन! क्या मैं लघुशंका के लिए जाऊँ?

2. (क) अद्य दिसम्बरमासस्य विशंति दिनाङ्क अस्ति।

(ख) स्व स्व वस्त्रं धारयत।

(ग) उपस्थितिं ब्रुवन्तु।

(घ) श्रीमन! उपस्थितोऽहम्।

(ङ) श्रीमान! किमहं जलं पातुं गच्छेयम्

3. (क) उत्तिष्ठत उपविशत च।

(ख) किं सर्वे आगताः?

(ग) स्व स्व पुस्तकानि उद्घाटयत।

(घ) किमहं दीर्घ शङ्कार्थं गच्छेयम्?

4. उत्तिष्ठत, दिनाङ्कः, कालांशः, पातुम्

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-3 ज्ञानं चेतनायाम्

अभ्यासकार्यम्

1. (क) चेतना सकल ज्ञानस्याधारः भवति।

(ख) गुरुः अस्माकं ज्ञानचक्षुः उद्घाटयति।

(ग) माता पिता आचार्यश्च त्रिदेवाः भवन्ति।

(घ) ज्ञानं चेतनायां निहितम् अस्ति।

2. (क) उपस्थिताः, (ख) शुद्धज्ञानं, (ग) यः ज्ञानं, (घ) (एतेषाम्) आज्ञा

3. (क) गुरु एव अज्ञानतां हर्तुं समर्थोऽस्ति।

(ख) अहमद्य युष्मान् चेतना विषये पाठयिष्यामि।

(ग) सर्वे छात्राः ध्यानपूर्वकं शृण्वन्तु।

(घ) मातापिता तथा गुरुः आदरणीयाः भवन्ति।

4. (क) किं रमेशः **उपस्थितः**?

(ख) सकल ज्ञानस्य आधारः **चेतना** भवति।

(ग) मातापिता आचार्यश्च त्रिदेवाः कथ्यन्ते।

(घ) गुरवः सदा सम्माननीयाः।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-4 गीर्वाणभारतेः महत्त्वम्

अभ्यासकार्यम्

1. (क) संस्काराणां जननी संस्कृत भाषा मन्यन्ते।

(ख) विश्वस्य आदि ग्रन्थस्य नाम 'ऋग्वेदः'।

(ग) संस्कृत भाषायाः व्याकरणं नितान्तं व्यवस्थितम् अस्ति।

(घ) भारतीय भाषासु न्यूनाधिकरुपेण संस्कृत शब्दा: प्रयुज्यन्ते।

(ङ) अस्माभि: सर्वै: संस्कृत भाषा समाराधनीया।

2. (क) ऋग्वेद:, (ख) सरसं, (ग) संस्कृतस्य, (घ) समाराधनीया, (ङ) गीर्वाणभारती

3. (क) संस्कृतभाषा मानवजीवने उपयोगिनी अस्ति।

(ख) आदिग्रन्थ: ऋग्वेद: संस्कृतभाषायाम् एव अस्ति।

(ग) अस्या: साहित्यम् अतीव सरसं वर्तते।

(घ) संस्कृत भाषाया: व्याकरणं नितान्तं व्यवस्थितम् अस्ति।

(ङ) अस्माभि: भारतीयै: संस्कृत भाषाया: पूजा करणीया।

4. (क) संस्कृत भाषाया: साहित्यं **सरसं** सरलं च अस्ति।

(ख) संस्कृत भाषाया: **अध्ययनेन** वयं श्रेष्ठा: भवाम:।

(ग) अस्माभि: सर्वै: संस्कृत भाषाया: **समाराधनीया**।

(घ) मानवीयगुणानां संस्कारणां च **उद्गमस्थानं** संस्कृतमेव।

(ङ) संस्कृत भाषाया: व्याकरणं **नितान्तं** व्यवस्थितम्।

5. (क) संस्कारों की जननी संस्कत भाषा को मानते हैं।

(ख) भारतीय भाषाओं में अधिकाधिक इसके शब्द प्रयोग किए जाते हैं।

(ग) चारों उपवेद भी संस्कृत में ही रचे गए।

(घ) संस्कृत भाषा का व्याकरण नितांत व्यवस्थित है।

(ङ) भाषाओं में मधुर मुख्य और दिव्य संस्कृत भाषा है।

6. (क) आराधना करनी चाहिए।

(ख) देवताओं की वाणी

(ग) फैली हुई है।

(घ) रचा गया

(ङ) रचे गए

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-5 मातृभक्ति: देशभक्तिश्च

अभ्यासकार्यम्

1. (क) भारतवर्ष: अस्माकं जन्मभूमि: अस्ति।

(ख) देवा: अस्माकं जन्मभूमौ जन्मगृहणाय स्पृह्यन्ति।

(ग) देवा: अपि देवत्वं विहाय अस्यां भूमौ-जन्म वाच्छन्ति यतोहि इयं भूमि: स्वर्ग मौक्षयो: कारणम् अस्ति।

(घ) जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गात् अपि गरीयसी।

2. (क) बालकस्य, (ख) बालमित्रै:, (ग) जन्मभूमि:, (घ) पुराचक्रवर्ती

3. (क) माता पुत्राय स्व कष्टानि अपि न चिन्तयति।

(ख) अस्मांभि: स्वदेशस्य सम्मानम् आदरं च स्वाभाविकम् अस्ति।

(ग) अस्माकं पराधीनताया: मुख्यं कारणम् एकताया: अभाव: आसीत्।

(घ) अत: यथाशक्ति सर्वै: कलह: परित्याज्य:।

4. (क) माता की सदा पूजा करनी चाहिए।

(ख) भारतवर्ष हमारी जन्मभूमि है।

(ग) देवता भी हमारी जन्मभूमि पर जन्म लेने के लिए इच्छा रखते हैं।

(घ) प्रचुर फलों से यह सुफला (लदी) है।

(ङ) इसी की गोद में अपने बालमित्रों के साथ स्वच्छंद खेलते हैं।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-6 राष्ट्रीयचिह्नानि

अभ्यासकार्यम्

1. (क) भारत-शासनस्य मुद्रायां सत्यमेवा जयते, इति अङ्कितम् अस्ति।

(ख) राष्ट्रध्वजे पट्टिकानां तिस्त्र संख्या विद्यते।

(ग) विश्वकविना रवीन्द्रेणं लिखितम्।

(घ) कमलम् अस्माकं राष्ट्रीय: पुष्पम्।

(ङ) व्याघ्र: अस्माकं राष्ट्रीय: पशु:।

2. (क) त्रिपट्टिका:, (ख) मयूर:, (ग) पुष्पम्, (घ) व्याघ्र: अस्माकं

3. (क) ध्वज: त्रिवर्णीय अस्ति।

(ख) मयूर: नृत्यति।

(ग) कमलं सुन्दरं पुष्पम् अस्ति।

(घ) अयं सुन्दरताया: कलाया: च प्रतीक: अस्ति।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-7 को धन्य:?

अभ्यासकार्यम्

1. (क) राज्ञ: प्रथम: प्रश्न: आसीत् यत् अस्मिन् लोके परलोके च क: धन्य: इति।

(ख) निषाद: व्याघ: उभयत्र न धन्य:।

(ग) सचिवः द्वितीया प्रश्नस्य उत्तरम् अददात् यत् कृपणः श्रेष्ठी अत्र धन्यः परलोके न।

(घ) राजा मन्त्रिणे प्रभूतं धनम् अयच्छत्।

2. (क) प्रश्नाः, (ख) धन्यः परलोके, (ग) तपोधनः, (घ) प्रभूतं

3. (क) कः + चित् , (ख) न + अस्ति, (ग) धर्म + आत्मा, (घ) धनम् + अयच्छत्

4. (क) साधुः **परलोके** धन्यः अत्र न।

(ख) **कृपणः** श्रेष्ठी अत्र धन्यः परलोके न।

(ग) चतुरः मन्त्रि प्रभूतं धनं प्राप्तवान्।

5.

पुरुष	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथमः पुरुषः	अक्रीडत्	अक्रीडताम्	अक्रीडन्
मध्यमः पुरुषः	अक्रीडः	अक्रीडतम्	अक्रीडत
उत्तमः पुरुषः	अक्रीडम्	अक्रीडाव	अक्रीडाम्

6.

धर्मात्मा श्रेष्ठी	→	उभयत्र धन्यः
कृपणः श्रेष्ठी	→	इह धन्यः
तपोधनः साधुः	→	परलोके धन्यः
निषादः व्याधः	→	उभयत्र अधन्यः

7. (ख) लिखन्–लिखता हुआ (ग) हसन्–हंसता हुआ

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-8 मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामः

अभ्यासकार्यम्

1. (क) दशरथः सूर्यवंशे उत्पन्नः।

(ख) श्रीरामस्य पत्नी सीता आसीत्।

(ग) श्रीराम स्व पितुः आज्ञया वनम् अगच्छत्।

(घ) सीता जनकस्य पुत्री आसीत्।

(ङ) रामरावणयोः मध्ये युद्धम् अभवत् यतोहि रावणः श्री रामस्य पत्नीं सीताम् अपाहरत्।

(च) श्रीरामः लोकप्रियः राजा आसीत्।

2. (क) महाराजः दशरथः, (ख) राज्यं करोति, (ग) प्रजावत्सलः, (घ) रावणो ऽपि

3. (क) दशरथस्य तिस्रः राज्ञ्यः आसान्।

(ख) रामःरावणम् अहनत्।

(ग) श्रीरामः भ्रातृषु अग्रजः आसीत्।

(घ) लक्ष्मणः रामेण सह वनम् अगच्छत्।

4. (क) श्रीराम का विवाह सीता के साथ हुआ।

(ख) सीता जनक की पुत्री थी।

(ग) श्रीराम पिता की आज्ञा से वन को गए।

(घ) रावण की मृत्यु के पश्चात् सीता उसके कारागार से मुक्त हुईं।

(ङ) श्रीराम अयोध्या के राजा बने।

5. (क) रावणस्य **मृत्योः** पश्चात् सीता कारागारात् मुक्ता अभवत्।

(ख) दशाननः सीताम् **अपाहरत्।**

(ग) **तस्मिन्** वंशे महाप्रतापी राजा दशरथः अभवत्।

(घ) **त्रयः** बालकाः राजोद्याने क्रीडन्ति।

(ङ) **तेन** रावणः हतः

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-9 संघे शक्तिः

अभ्यासकार्यम्

1. (क) यदा राष्ट्रे एकतायाः अभावः भवति तदा राष्ट्रः परतन्त्रतायाः पाशे बद्धः भवति।

(ख) तन्तुसमूहेन पटः जायते।

(ग) यत्र एकतायाः अभावो वर्तते तत्र सुखसमृद्धेरपि अभावः दृश्यते।

(घ) एकतायाः अद्भुतः प्रभाव एषःभवति यद स राष्ट्रः कस्यापि देशस्य परतन्त्रः न भवति देशे च सुखशन्तिरपि वर्धते।

2. (क) जलबिन्दु, (ख) बलवान्, (ग) एकत्व, (घ) सुखशान्तिं

3. (क) एकतयैव समाजः तथा राष्ट्रः बलवान् भवति।

(ख) भारतायेषु यदा एकता जाग्रता अभवत् तदा स्वतन्त्रता अलभत।

(ग) यत्र एकता अस्ति तत्र जनाः शान्ति–सुखेन वसन्ति।

(घ) वयम् एकतायाः भावनया तिष्ठेम।

(ङ) एकतया जनाः शक्ति शालिनः भवन्ति।

4. (क) एकतायाः अद्भुतः **प्रभावः** भवति।

(ख) स्व जन्मभूमेः **मृत्तिका** सदा वन्दनीया।

(ग) अल्पैः वस्तुभिः **संहति** कार्य साधिका।

(घ) लघुभि लघुभिः तृणैः रज्जुः निर्मीयते।

5. (क) जलबिन्दु के समूह से नदियाँ और सागर बनते हैं।

(ख) मिट्टी के कणों के समूह से ही पर्वत बनता है।

(ग) जहाँ एकता का अभाव वहाँ सुख–समृद्धि का भी अभाव (होता है)।

(घ) सभी लोग एकता की भवना से युक्त हों।

6. (क) प्रथमा विभक्ति:, (ख) षष्ठी विभक्ति:, (ग) पञ्चमी विभक्ति:, (घ) तृतीया विभक्ति:

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-10 नास्ति सत्यात् परोधर्मः (संलापः)

अभ्यासकार्यम्

1. (क) सार्थवाहा: पथिका: च बगदाद नगरम् अगच्छन्।

(ख) दस्युराज: बालकम् अकथयत् यत् तव पार्श्वे कि अस्ति इति।

(ग) बालकस्य नाम अब्दुल कादिर: आसीत्।

(घ) बालकस्य मुद्रा: तस्य कञ्चुकेआसन्।

2. (क) सर्वंधनम्, (ख) अपृच्छत्, (ग) सन्ति, (घ) पालयामि

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-11 वैज्ञानिकोपकरणानि

अभ्यासकार्यम्

1. (क) जना: आकाशवाण्या: वृन्तानि, भाषणानि, वार्ता: गीतानि च शृण्वन्ति।

(ख) दूरभाषेण वयं दूरस्थै: जनै: सह वार्तालापं कुर्म:।

(ग) प्रतिच्छायायन्त्रं महत्त्वपूर्ण लेखानां पुस्तकानां च प्रतिच्छायां करोति।

(घ) वायुयानं आकाशमार्गेण गच्छति।

2. (क) शीतलानि, (ख) शिक्षाक्षेत्रेषु, (ग) अत्याधुनिकं, (घ) महत्त्वपूर्ण लेखानां

3. (क) आधुनिकं युगं विज्ञानयुगम् अस्ति।

(ख) अद्य प्रतिगृहे अस्य उपयोग: अस्ति।

(ग) अनेका: शैक्षिका: कार्य कृया:अनेकै प्रसारिता: भवन्ति।

(घ) इदं गगने तीव्रगत्या उड्डयते।

4.
- दूरदर्शनम् → दृश्यश्रव्ययन्त्रम्
- दूरभाषम् → संवादयन्त्रम्
- कम्प्यूटरयन्त्रम् → त्वरितकार्ययन्त्रम्
- वायुयानम् → आकाशगामिवाहनम्
- रेडियोयन्त्रम् → श्रव्ययन्त्रम्
- प्रतिच्छायायन्त्रम् → प्रतिच्छाया

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-12 ईश्वरचन्द्र विद्यासागरः

अभ्यासकार्यम्

1. (क) ईश्वरचन्द्र विद्यासागरस्य जन्म बंगप्रान्तस्य मेदिनीपुर जनपदस्य वीरसिंहग्रामे 1820 ईसवीये वर्ष अभवत्।

(ख) अतियोग्यताकारणेन ईश्वरचन्द्र: 'विद्यासागर' इति नाम्ना ख्यात: अभवत् ।

(ग) स: एकादश (11) वयसि साहित्यिक-ग्रन्थानां व्याख्यां कुर्तं समर्थ: आसीत्।

(घ) स: सञ्चितस्य धनेन अपरेषां साहाट करोति स्म।

2. (क) प्रतिभासम्पन्न:, (ख) 11, (ग) समीचीना, (घ) छात्रवृत्ति:, (ङ) पक्ष्यामि

3. क्त्वा, क्त्वा, तुमुन्, ल्यप्

4. (क) **एकदा** स: स्व पिता सह कोलकाता नगरं गच्छति स्म।

(ख) स: अतीव **श्रमनिष्ठ:** आसीत्।

(ग) अयं **ग्राम:** अतीव सुन्दर: अस्ति।

(घ) अहमपि त्वया **सह** चलिष्यामि।

(ङ) स: **एकाकी** एव भ्रमणाय गच्छति।

(च) कक्षायां प्रथमं स्थानं प्राप्तम् अत: अस्मै छात्रवृत्ति: प्रदत्ता।

5.

विभक्ति:	**वचन्**	**लिङ्गम्**
सप्तमी	एकवचनम्	स्त्रीलिङ्गम्
तृतीया	एकवचनम्	पुल्लिङ्गम्
पञ्चमी	एकवचनम्	नपुंसकलिङ्गम्
षष्ठी	एकवचनम्	पुल्लिङ्गम्
चतुर्थी	एकवचनम्	पुल्लिङ्गम्
षष्ठी	बहुवचनम्	नपुंसकलिङ्गम्
प्रथम	बहुवचनम्	नपुंसकलिङ्गम्
प्रथमा	एकवचनम्	स्त्रीलिङ्गम्
षष्ठी	बहुवचनम्	पुल्लिङ्गम्

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-13 विद्यायाः महत्त्वम्

अभ्यासकार्यम्

1. (क) विद्या दिक्षु कीर्तिं वितनोति।
(ख) प्रवासे विद्या मातृ सदृशी भवति।
(ग) विद्याधनं प्रधानम्।
(घ) अन्नदानात् परं विद्यादानम्।

2. (क) वितनोति, (ख) मातृसदृशी, (ग) भ्रातृभाज्यं, (घ) विद्यादानं

3. (क) विद्या कल्पलता इव अस्ति।
(ख) विद्या कामधेनोः इव फलं ददाति।
(ग) विद्याधनं चौरः चोरितुं न शक्नोति।
(घ) अन्नदानात् क्षणिका तृप्तिः भवति।

4. (क) रमेशस्य जनकः ह्यः **प्रवासे** गतः।
(ख) अन्नेन तु क्षणिका **तृप्तिः** भवति।
(ग) तत् भोजनं केन **नीयते**?
(घ) विद्या कीर्तिं दिक्षु **वितनोति**।

5. (क) न चोर द्वारा चुराए जाने योग्य है, न राजा द्वारा छीने जाने योग्य।
(ख) विद्याधन श्रेष्ठ धन है, इससे अलग कोई दूसरा धन नहीं।
(ग) दूर चले जाने पर (विदेश में) विद्या माता के समान है, यह गुप्त धन कहलाती है।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-14 कनकसूत्र-कथा

अभ्यासकार्यम्

1. (क) वटवृक्षः एकस्तिम प्रदेशे आसीत्।
(ख) वायसदम्पती वटवृक्षे प्रतिवसतिस्म।
(ग) तदपत्यानि सर्पः भक्षयति स्म।
(घ) शृगालः अकथयत् यत् गच्छ त्वं किञ्चिन्नगरं राजाधिष्ठानम्। तत्र कस्यापि धनिनो राजामात्यादेः कनकसूत्रं हारं वा गृहीत्वा तस्य कोटरे प्रक्षिपतु। येन सर्पस्तद् ग्रहणेन मृत्युं प्राप्स्यते।
(ङ) कथायाःअन्ते शृगालोपायेन सर्पः हतः।

2. (क) वटवृक्षः, (ख) एकःकृष्णः प्रतिवसति स्म, (ग) सः सर्पः,तदपत्यानि, (घ) किं कर्तव्यं, (ङ) अपि, तत् कनक सूत्रं

3. स्वयं कीजिए।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-15 श्रीकृष्णः

अभ्यासकार्यम्

1. (क) श्रीकृष्णे सह गोपाः यमुनातटे अगच्छन्।
(ख) गोपाः विषक्तं यमुनाजलं पीत्वा मूर्च्छिताः अभवन्।
(ग) कालियानागस्य कुण्डं यमुनाजले आसीत्।
(घ) श्रीकृष्ण कालियानागस्य फणानामुपरि आरुह्य अनृत्यत्।
(ङ) कालियानागस्य एकाधिकाः शताः फणाः आसन्।

2.

(क) नागः	= नाग	यमुनाजले भयङ्करः **नागः** आसीत्।
(ख) रक्तम्	= खून	नागस्य फणैः **रक्तं** निस्सरति।
(ग) प्रसार्य	= फैलाकर	नागः स्व फणान् प्रसार्य समक्षम् आगतः।
(घ) जन्मतः	= जन्म से	नागः अवदत् यत् वयं जन्मः एव विषक्ता सम।

3. (क) यमुनातटम्, (ख) विषाक्तं, (ग) एकाधिकशताः, (घ) फणानामुपरि आरुह्य

4. (1) ग. एकदा श्रीकृष्णः वृन्दावने यमुनातटम् अगच्छत्।
(2) क. यमुनाजले कालियानागस्य कुण्डम् आसीत्।
(3) ङ. अनेकाः खगाः पशवः च तत् जलं पीत्वा मृत्युं प्राप्ताः।
(4) ख. श्रीकृष्णः वृक्षात् विषयुक्ते जले अकूर्दत्।
(5) घ. कालियानागस्य एकाधिकशताः फणाः आसन्।

5. (क) श्रीकृष्ण उन्हें मूर्च्छित देखकर व्याकुल हो गए।
(ख) उनके साथ ग्वाले भी गए।
(ग) उस नाग ने फणों को फैलाकर कृष्ण को डसना चाहा।
(घ) श्री कृष्ण उसके फणों के ऊपर चढ़कर नाचने लगे।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-16 कन्याकुमारी

अभ्यासकार्यम्

1. (क) कन्याकुमारी भारतस्य दक्षिणे कोणे अस्ति।
(ख) समुद्रमध्ये नाति दूरे शिलातले स्वामीविवेकानन्दस्मारकं मण्डपम् अस्ति।
(ग) कन्याकुमारी अति रमणीयं पावनं च तीर्थ स्थनाम् अस्ति।
(घ) समुद्रतटम् अनेकवर्णैः सिकताकणैः मनोहरं भाति।

2. (क) बहूनि, (ख) दक्षिणे कोणे, (ग) नितरां, (घ) नौकया

3. सूर्य + उदय:, सूर्य + अस्त:, न + अतिदूरम्

4.

विभक्तिः	**वचनम्**
तृतीया	एकवचनम्
षष्ठी	एकवचनम्
षष्ठी	एकवचनम्

5. (क) कन्याकुमारी में सूर्योदय और सूर्यास्त दर्शनीय है।
(ख) समुंद्रतट अनेक रंगों वाले रेतकणों में सुंदर लगता है।
(ग) यह तीर्थस्थान भारत के दक्षिण कोने में हैं।
(घ) अरब सागर हिन्द महासागर से घिरा यह स्थान सुंदर है।
(ङ) समुद्रतट की शीतल वायु शाम को सेवन करनी चाहिए।

6. (क) भारतदेशे अनेकानि तीर्थ स्थानानि सन्ति।
(ख) कन्याकुमारी भारतस्य दक्षिणभागे अस्ति।
(ग) इदं दृश्यं दृष्टुं बहव: पर्यटका: आयान्ति।
(घ) समुद्रतटे सिकताया: अनेकवर्णकणा: शोभन्ते।
(ङ) पूर्णिमातिथौ सायं काले पूर्व दिशि चन्द्रोदय: भवति।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-17 ग्राम्यजीवनम्

अभ्यासकार्यम्

1. (क) कृषक: ग्रामे निवसन्ति।
(ख) ग्रामस्य जलवायु: शुद्ध: भवति।
(ग) ग्रामम् अभित: द्वे सरिते स्त:।
(घ) ग्रामस्य जना: श्रेष्ठ: सन्ति।

2. (क) रमणीय: अस्ति, (ख) कृषिकार्यं, (ग) वहन्ति, (घ) द्वे सरिते

3. (क) यह मेरा गाँव है।
(ख) गाँव में एक विद्यालय है।
(ग) गाँव के बीच में एक बगीचा भी है।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-18 वसन्त ऋतु:

अभ्यासकार्यम्

1. (क) वसन्तऋतु: सर्वेषु ऋतुषु सर्वश्रेष्ठ:अतएव। अयम् ऋतुराज: कथ्यते।
(ख) वसन्तऋतौ प्रकृते: सौन्दर्यं दृष्टवा चित्तं प्रासीदति।
(ग) होली उत्सवे जना: अन्योन्यास्य उपरि रंगान् प्रक्षिपन्ति प्रमुदिता: च भूत्वा गायन्ति, नृत्यन्ति।

2. क. वसन्तऋतौ प्रकृति: कीदृशा भवति?
ख. पुष्पेषु के गुञ्जन्ति?
ग. पवन: कथं वहति?
घ. पवन: किम् आवहति?
ङ. सर्वत्र कीदृशं वातावरणं भवति?

3.

उत्तरायण:	आगच्छति
शैत्यम्	वृद्ध:
बाल:	तत:
गच्छति	उष्णत्वम्
इत:	दक्षिणायण:

4. (क) अशुद्धम्, (ख) शुद्धम्, (ग) अशुद्धम्, (घ) अशुद्धम्, (ङ) अशुद्धम्,

5. वसन्तऋतौ, कुसुमानि, पुष्पेषु, पवन:, जना:, आनन्देन, ऋतुराज:

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-19 रक्षाबन्धनम्

अभ्यासकार्यम्

1. (क) उत्सवेषु रक्षाबन्धनम् प्रमुख:महोत्सव: अस्ति।
(ख) रक्षाबन्धनं प्रतिवर्षं श्रावणमासस्य पूर्णिमायां भवति।
(ग) रक्षासूत्रं भगिन्या: प्रेम्णा: प्रतीकम् अस्ति।
(घ) भगिन्य भ्रातृणां दीर्घायुष्यं जीवनं च कामयन्ति।
(ङ) भ्रातर: भगिनीभ्य: उपहाराणि प्रयच्छन्ति।

2. (क) रक्षाबन्धनम्, (ख) हर्षोल्लासेन, (ग) आनन्द: एव आनन्द:, (घ) भ्रातृणां करेषु, (ङ) विशिष्ट:

3. (क) अनेका: = अनेक — भारतदेशे अनेका: उत्सवा: आयोज्यन्ते।
(ख) उत्सव: = पर्व — अयम् हर्षोल्लासेन आनयन्ति।
(ग) आनन्द: = आनंद — आज्मिन् उत्सवे आनन्द: एव आनन्द: भवति।
(घ) प्रतीकम् = चिह्न — रक्षाबन्धनं प्रम्ण: प्रतीकम् अस्ति।
(ङ) उपहारम् = भेंट — भ्राता भगिन्ये उपहारं: यच्छति।

4. (क) हिन्दूनां चत्वार: प्रमुखा: उत्सवा: सन्ति।

(ख) रक्षासूत्रं भगिनीनां प्रेम्ण: प्रतीकम् अस्ति।

(ग) रक्षाबन्धनं भारतस्य प्रमुख: उत्सव: अस्ति।

(घ) अयं 'श्रावणी' नाम्ना प्रसिद्ध: अस्ति।

(ङ) राज्ञी कर्मवती 'हुमायूँ' इतिनामकं नृपं रक्षासूत्रं प्रेषितवती।

5. अनादिकाल से, आपस में, दृष्टांत, चिह्न, बादलों का, पवित्र

6. बहव:, पर्व, नर:, चिह्नम्, विशेष:, प्रेम

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-20 विजयादशमी

अभ्यासकार्यम्

1. (क) विजयादशमी उत्सवस्य आयोजनं आश्विन मासस्य शुक्लपक्षे दशम्यां तिथौ भवति।

(ख) अस्मिन् दिवसे ग्रामेग्रामे नगरेनगरे च रामलीलाया: प्रदर्शनं भवति।

(ग) अस्मिन् दिवसे बङ्गालप्रान्ते शक्तिरुपाया: सिंहवाहिन्या: दुर्गादेव्या: पूजा भवति।

(घ) जना: रामं मर्यादाया: सत्यस्य सदाचारस्य च प्रतीकं मन्यन्ते।

(ङ) रावण: अंहकारी नृप: आसीत्।

(च) विजयदशम्य: उत्सवात् इयं शिक्षा समुपलभ्यते यत् धर्म: एव जयति अधर्मस्य च दारुण: परिणाम: भवति।

2. (क) उत्सवप्रिया:, (ख) रावणस्य, (ग) शस्त्रपूजनम्, (घ) बङ्गालप्रान्ते, (ङ) पूर्ण:

3. (क) भारतीया: उत्सवप्रिया: भवन्ति।

(ख) अनेकेषु उत्सवेषु विजयादशम्या: विशिष्टं महत्त्वम् अस्ति।

(ग) विजयादशमी दिवसे भारतीया: शस्त्रपूजनं कुर्वन्ति।

(घ) भारतीया: रामं मर्यादया: सत्यास्य सदाचारस्य च प्रतीकं मन्यन्ते।

(ङ) धर्माचरणं श्रेष्ठं भवति।

4. (क) लोग राम को मर्यादा का प्रतीक मानते हैं।

(ख) इस दिन भारतीय शस्त्र-पूजन करते हैं।

(ग) लोग इस उत्सव को पूरे उत्साह से मनाते हैं।

(घ) भारतीय उत्सव प्रिय होते हैं।

(ङ) लोग रामलीला देखने के लिए इकट्ठे होते हैं।

5. (क) अयम् **उत्सव:** अति विशिष्ट: अस्ति।

(ख) **अधर्म:** सदा पराजयति।

(ग) इमां कथाम् **अश्रित्य** जना: रामलीलां कुर्वन्ति।

(घ) रामलीलां दृष्टुं महत् **जनसम्मर्द:** एकत्रित: भवति।

(ङ) **श्रूयते** यत् अस्मिन् दिने नीलकण्ठ पक्षिण: दर्शनं शुभं भवति।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-21 प्रियं मम गृहम

अभ्यासकार्यम्

1. (क) गोविन्दपुरं गङ्गाया: पवित्र तटे स्थित: अस्ति।

(ख) अहं गोविन्दपुरे निवसामि।

(ग) धेनु: मधुरं दुग्धं ददाति।

(घ) धेनो: दुग्धेन शरीरं पुष्टं भवति।

(ङ) कूपस्य जलं निर्मलं शीतलं च अस्ति।

2. (क) शोभन:, (ख) शुकौ, (ग) कूप:

3. (क) मम गृहस्य प्राङ्गणे एक: **कूप:** अस्ति।

(ख) इदं **पुष्पम्** अति सुगन्धितम् अस्ति।

(ग) मम **गृहं** शोभनम् अस्ति।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-22 कारककुतूहलम्

अभ्यासकार्यम्

1. (क) पिककाकायो: भेद: वसन्त समये भवति।

(ख) विनय: वंशम् आख्याति।

(ग) याचकाय भोजनं दातव्यम्।

(घ) घट: जलबिन्दो: निपातेन पूर्यते।

2. (क) नम्रता, (ख) सुपुत्रेण, (ग) भोजनम्, (घ) ददामि

3. प्रत्येक पर्वत पर मणि नहीं होती है, ना ही प्रत्येक हाथी के (पास) मोती होता है। साधु (भले) लोग भी सभी जगह नहीं होते (और) प्रत्येक वन में चंदन का वृक्ष (भी) नहीं होता है।

क्रियात्मकं कार्यम्

स्वयं कीजिए।

पाठ-23 अव्ययशब्दा:

विद्यार्थी स्वयं कीजिए।

पाठ-24 व्याकरणम्

विद्यार्थी स्वयं कीजिए।